अयोध्या पर्यटन को नया आयाम दे सकता है नगर के प्राचीनतम ऐतिहासिक स्थलों एवं कुण्डों का जीर्णोंद्धार

शिवम मिश्र एवं डॉ. विजय कुमार अग्रवाल*
शोधछात्र, वाणिज्य
डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या (उ.प्र.)
*प्रोफेसर– वाणिज्य विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोण्डा (उ.प्र.)

सारांश

वर्तमान समय में अयोध्या नगरी जिस प्रकार से देशी एवं विदेशी पर्यटकों को अपनी ओर आर्किषत कर रही है। उसके अवलोकन से धार्मिक पर्यटन को एक नई ऊँचाई मिलती दिख रही है। भारत के उत्तर प्रदेश में उपस्थित अयोध्या जनपद जिस प्रकार से अपनी ऐतिहासिक एवं धार्मिकता को स्वयं में समेटे हुये है वह देश के लिए अत्यन्त गौरवान्वित करने वाली बात है।

मुख्य शब्द– धार्मिक पर्यटन, ऐतिहासिकता, पौराणिकता, जीर्णशीर्ण, रुद्रयामल।

प्राचीनकाल से अयोध्या को अत्यन्त पवित्र एवं धार्मिक नगरी होने का सौभाग्य प्राप्त है। हिन्दुओं के आराध्य श्रीराम की जन्म स्थली होने के साथ ही साथ अनेक धर्मों एवं विविधिता से भरी यह अयोध्या नगरी प्रारम्भ से ही लोगों को आकर्षित करने वाली रही है। अथर्व वेद में बताया गया है कि–

अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पुरायोध्या। तस्यां हिरण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः।[1]

अर्थात् देवों की नगरी अयोध्या रूपी इस शरीर में अष्ट चक्र और नौ द्वार हैं, इसी नगरी में एक देदीप्यमान हिरण्य कोष है, जो अनन्त, अपरिमित, असीम सुख शांति, आनंद एवं दिव्य ज्योति से परिपूर्ण है, उपासक साधक ही इस दिव्य कोष को प्राप्त कर सकते हैं, इस नगरी की तुलना स्वर्ग से की गई है।[2]

वर्तमान में भी त्रेताकालीन स्थल होने के प्रमाण के साथ अत्यन्त प्राचीन कुण्ड भी उपस्थित हैं जो यहाँ की पौराणिकता को पुष्ट करते हैं परन्तु अनेक पौराणिक स्थलों की दशा अत्यन्त जीर्णशीर्ण अवस्था में है जो धार्मिकता एवं पर्यटन की दृष्टि से उचित नहीं है पिछले कुछ वर्षों में अयोध्या के पर्यटन एवं व्यवसाय में बढ़ोतरी हुई है। परन्तु यहाँ के ऐतिहासिकता को पूर्ण विकसित कर व्यवसाय एवं पर्यटन में और भी अत्यधिक वृद्धि सम्भव है।

अयोध्या में प्रमाणिक ऐतिहासिकता से जुड़े ऐसे अनेक स्थल हैं जहाँ पर अभी पर्यटकों का कोई हस्तक्षेप नहीं हो पा रहा है और न ही पर्यटकों को कोई विशेष जानकारी प्राप्त हो पाती है। कुछ मुख्य स्थलों जैसे श्रीराम जन्म भूमि, हनुमानगढ़ी, कनक भवन, दशरथ महल आदि को छोड़ कर अयोध्या के अन्य ऐतिहासिक एवं धार्मिकता से जुड़ी अन्य बातें पर्यटक न तो देख पाता है और न ही उसकी जानकारी प्राप्त कर पाता है। इन्हीं जानकारियों को सार्वजनिक रूप

से प्रचारित प्रसारित करने हेतु मैंने यहाँ के पौराणिक स्थलों एवं कुण्डों का जीर्णोद्धार करके प्रचारित प्रसारित करने की बात कही है जिससे दर्शनार्थी व पर्यटक यहाँ के ऐतिहासिकता (अनेक धर्म) की प्राप्त कर सकें एवं अयोध्या में पर्यटन का प्रभाव बढ़ने के साथ–साथ यहाँ के राजस्व एवं प्रति व्यक्ति आय में बढ़ोत्तरी हो सके।

धार्मिक पर्यटन का बढ़ता महत्व

धार्मिक पर्यटन, पर्यटन का ऐसा प्रकार है जिसमें पर्यटक तीर्थ यात्रा, अवकाश, अध्ययन आदि उद्देश्यों की पूर्ति के लिए व्यक्तिगत अथवा सामूहिक रूप से यात्रा करते हैं। अयोध्या में राम मन्दिर की आधारशिला रखे जाने के पश्चात् यहाँ के पर्यटकों में अत्यधिक वृद्धि हुई है। मन्दिर के निर्माण के साथ ही अयोध्या का सर्वांगीण विकास होने की सम्भावना बढ़ गई है। पर्यटन में अपार वृद्धि होने के कारण यहाँ रोजगार में भी वृद्धि होगी जिससे यहाँ के लोगों के जीवन स्तर में सुधार के साथ धार्मिक पर्यटन को रफ्तार मिलेगा।

वर्तमान में देश में हर दूसरा घरेलू पर्यटक धार्मिक यात्रा पर ही जाता है, इसलिए सरकार इसको और वृद्धि करने की कोशिश कर रही है भारत में होने वाले पर्यटन का लगभग 60 प्रतिशत हिस्सा धार्मिक पर्यटन का ही होता है। अर्थात् दो में से एक घरेलू पर्यटक धार्मिक स्थलों की यात्रा अथवा तीर्थ यात्रा पर ही जाता है। इसलिए सरकार भी अब धार्मिक स्थलों के बुनियादी ढांचे एवं अन्य आधारभूत सुविधाओं के विकास पर तत्परता से कार्य कर रही है। केन्द्र सरकार ने 2016 में पर्यटन की दो परियोजनायें स्वदेश दर्शन एवं प्रसाद लागू की थी, जिनके अन्तर्गत 15 थीम के तहत पर्यटन स्थलों का विकास किया जा रहा है, इनमें बुद्ध सर्किट, रामायण सर्किट, कृष्णा सर्किट, अध्यात्मिक सर्किट, हैरिटेज सर्किट मुख्य रूप से शामिल हैं।[3]

IXIGO की एक रिपोर्ट के अनुसार भारतीय पर्यटन धार्मिक स्थलों की यात्रा ज्यादा कर रहे हैं, रिपोर्ट के अनुसार पुरी के जगन्नाथ मन्दिर, तिरुपति बाला जी (आन्ध्र प्रदेश), शिर्डी (महाराष्ट) में धार्मिक पर्यटन अत्यधिक बढ़ा है भारत में सर्वाधिक लोकप्रिय एवं सबसे ज्यादा पर्यटकों वाली जगह बोध गया, कोणार्क मन्दिर, स्वर्ण मन्दिर, वैष्णों देवी मन्दिर, तिरुपति बाला जी शामिल है तथा अयोध्या का राम मन्दिर निर्माण के बाद अत्यधिक पर्यटकों की श्रेणी में शामिल हो जायेगा, थिंक टैंक IBEF के अनुसार भारत में जी.डी.पी. में पर्यटन एवं पर्यटन क्षेत्र का योगदान वर्ष 2017 में 15.24 लाख करोड़ रुपये से बढ़कर 2028 तक 32 लाख करोड़ रुपये तक पहुँचने का अनुमान है जिसमे सर्वाधिक भाग घरेलू पर्यटन का है तथा जिसमे से 60 प्रतिशत हिस्सा धार्मिक पर्यटन का है अर्थात् धार्मिक पर्यटन का कारोबार लगभग 60 लाख करोड़ रुपये का है, पर्यटन मंत्रालय से प्राप्त आकड़ों के अनुसार वर्ष 2018 में देश में घरेलू पर्यटकों की संख्या 1.85 अरब थी जो पिछले साल के मुकाबले में 12 प्रतिशत अधिक एवं वर्ष 2019 में भारत में 1.08 करोड़ पर्यटकों का आवागमन हुआ जिससे 1.94 लाख करोड़ रुपये की आय प्राप्त हुई, वर्ष 2019 तक भारत के पर्यटन क्षेत्र में लगभग 4.2 करोड़ लोगों को रोजगार प्राप्त हुआ जो कुल रोजगार का 8.1 प्रतिशत हिस्सा है।[4]

शोध समस्या का विवरण

पर्यटन को किसी भी स्थल भौतिक एवं आर्थिक विकास एवं रोजगार के सृजन के दृष्टि से एक महत्वपूर्ण क्षेत्र माना जाता है, विश्व के विदेशी मुद्रा अर्जित करने में 5 प्रमुख क्षेत्रों में से भी पर्यटन उद्योग को विशेष स्थान प्राप्त है योजना (नीति) आयोग के द्वारा भी पर्यटन को

भारत में कम दक्ष एवं अकुशल श्रमिकों को भी रोजगार के अवसर प्रदान करने वाले दूसरे सबसे बड़े क्षेत्र के रूप में मान्यता प्रदान की है, देश के सकल घरेलू उत्पाद में भी पर्यटन की हिस्सेदारी लगभग 6 प्रतिशत पर्यटन धार्मिक एवं अन्य क्षेत्रों में रोजगार सृजन का एक महत्वपूर्ण साधन रहा है।[5] अयोध्या के धार्मिक पर्यटन के पहलू को देखे तो यहाँ पिछले कुछ वर्षों में राम मन्दिर फैसले के बाद एवं राम मन्दिर निर्माण के भूमि पूजन के साथ यहाँ आने वाले पर्यटकों की संख्या आशातीत वृद्धि हुई है। परन्तु अयोध्या में प्रर्याप्त आधारभूत सुविधायें न होने के कारण, स्थलों का समुचित विकास एवं यहाँ कें धार्मिक और ऐतिहासिक पहलू की व्यापकता न होने के कारण पर्यटक उससे वंचित रह जा रहे हैं। वर्तमान में यदि पर्यटक अयोध्या आते हैं तो विशेषकर श्रीराम जन्म स्थली देखना ही उनकी पहली प्राथमिकता होती है। परन्तु त्रेतायुगीन एवं श्रीराम की लीलाओं से सम्बन्धित अन्य स्थलों का विकास न होने के कारण पर्यटक उनसे अछूते रह जाते हैं।

जिस प्रकार पौराणिक अयोध्या में 148 धार्मिक स्थल जो रुद्रयामल ग्रन्थ को आधार मान कर बताये गये हैं उसमे से आम पर्यटक केवल 4 से 5 स्थलों को ही देखकर वापस लौट जाते है। जो अयोध्या के पर्यटन को प्रभावित कर रहे हैं। हिन्दू धर्म के अलावा जैन धर्म, बौद्ध धर्म, मुस्लिम धर्म, सिक्ख धर्म की भी अयोध्या एक महत्वपूर्ण स्थली है। जैन धर्म के 24 तीर्थांकरों में से 5 तीर्थांकरों का जन्म स्थल भी अयोध्या ही है।[6] यहाँ के कुण्डों की बात करें तो रुद्रयामल ग्रन्थ के अनुसार 56 कुण्ड उपस्थित हैं। परन्तु वर्तमान में केवल 10 से 20 कुण्डों का अस्तित्व बचा है। जिनको अयोध्या विकास प्राधिकरण द्वारा चिन्हित कर सौन्दर्यीकरण का कार्य चल रहा है जो साराहनीय है। पौराणिक ग्रन्थों के आधार पर यहाँ धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थलों की चिन्हांकन के पश्चात् उनका वास्तविक स्वरूप की भव्यता का न होना पर्यटन के लिए एक बड़ी समस्या बनकर सामने आती है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस अध्ययन का उद्देश्य–

1. धार्मिक पर्यटन की अवधारणा तथा प्रासंगिकता की व्याख्या करना।
2. अयोध्या के धार्मिक पर्यटक स्थलों का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत करना।
3. अयोध्या के धार्मिक पर्यटन की वर्तमान दशा की समीक्षा करना।
4. अयोध्या के धार्मिक पर्यटन की समस्याओं और सम्भावनाओं की पहचान करना तथा पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु संस्थाओं एवं चुनौतियों से निपटने के उपाय को प्रस्तुत करना।

अध्ययन का औचित्य

अभी तक प्रदेश के सकल घरेलू उत्पाद में अयोध्या जनपद हिस्सेदारी अत्यन्त न्यूनतम रही है अयोघ्या अभी प्रदेश की अर्थव्यवस्था में 40 वें पायदान पर है प्रदेश की अर्थव्यवस्था में गौतमबुद्ध नगर का सबसे बड़ा योगदान है यह जिला 153262.92 करोड़ के सकल घरेलू उत्पाद के साथ प्रदेश के अर्थव्यवस्था में 9.19 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ शीर्ष पर है यहाँ के लोगों की प्रतिव्यक्ति वार्षिक औसत आय 671208.60 रुपये है परन्तु प्रदेश में पर्यटन की दृष्टि सबसे अच्छी स्थिति आगरा की है जो 57175.42 करोड़ के सकल जिला घरेलू उत्पाद के साथ प्रदेश की अर्थव्यस्था में 3.43 प्रतिशत योगदान के साथ तीसरे स्थान पर वाराणसी की

अर्थव्यवस्था में 1.58 प्रतिशत योगदान के साथ 18 वें पायदान पर है इसके साथ ही अयोध्या 15567.56 करोड़ सकल जिला घरेलू उत्पाद के साथ अर्थव्यवस्था में मात्र 0.93 प्रतिशत योगदान कर पाता है, यहाँ के लोगों की प्रतिव्यक्ति आय मात्र 50460.84 वार्षिक पर अटकी है और यह प्रदेश में 40 वें पायदान पर है।[7]

इन्हीं कारणों को ध्यान में रखते हुये अयोध्या को पर्यटन के सर्वोच्च स्थान के साथ यहाँ की अर्थव्यवस्था को और समृद्ध करने के लिये पर्यटन को बढ़ावा देना अतिआवश्यक है, प्रदेश सरकार में अयोध्या के विकास की मौजूदा परियोजनाओं के साथ 32 हजार करोड़ के लागत की कार्य योजना तैयार की है जिससे अर्थतन्त्र को रफ्तार मिलेगा एवं अयोध्या प्रदेश की अर्थव्यवस्था का नवीन केन्द्र बनकर उभरेगी जो उत्तर प्रदेश की वैश्विक पहचान बनेगी एवं आने वाले समय में विश्व की धार्मिक राजधानी के रूप में स्थापित होगी।[8]

अध्ययन की परिकल्पना

मेरा शोध एवं अध्ययन निम्नलिखित परिकल्पनाओं पर आधारित है–

1. पर्यटन क्षेत्र को विकसित करके अयोध्या जनपद में लोगों के रोजगार सृजन के अनेकों अवसरों को उत्पन्न किया जा सकता है।
2. यहाँ का धार्मिक एवं ऐतिहासिक पर्यटन विदेशी मुद्रा अर्जित करने का एक बड़ा माध्यम बन सकता है।
3. अयोध्या में धार्मिक पर्यटन के विकास के लिए अनेक पौराणिक मन्दिरों एवं कुण्डों का संरक्षण, जीर्णोद्धार एवं यहाँ की आधारभूत आवश्यकताओं जैसे सड़क, परिवहन, शौचालय, अन्य विशेष स्थलों से जुड़ाव यात्री निवास आदि के साधनों की असुविधाओं के शीघ्र निस्तारण का प्रबन्ध करना।

शोध प्रविधि

मेरे द्वारा प्रस्तुत अध्ययन विश्लेषणात्मक प्रकृत्ति का है इस उद्देश्य से आकड़ों के एकत्रीकरण के लिए

- प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों स्रोतों की सहायता ली गई है।
- प्रमुखता द्वितीयक स्रोत के सहायता से अध्ययन करना सम्भव हुआ है। इस हेतु विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं, पुस्तके/ग्रन्थों, सन्दर्भ वार्षिकी, राज्य/केन्द्र सरकार की रिपोर्ट अन्य संगठनों की रिपोर्ट आदि से प्राप्त सूचनाओं एवं आकड़ों को प्रदर्शित किया गया है।
- अयोध्या के जिला पर्यटन विभाग, विकास प्राधिकरण, सांख्यिकी विभाग एवं उत्तर प्रदेश सरकार के विभागों से प्राप्त सूचनायें दी गयी है।
- वेबसाइटों से प्राप्त सामग्री की सहायता ली गई है आवश्यकतानुसार प्राथमिक आकड़ों का संग्रहण साक्षात्कार विधि से किया गया है तथा इस प्रकार एकत्रित प्रतिशतता, अनुपात, समानुपात, प्रविधि विश्लेषण, माध्य इत्यादि की सहायता से विश्लेषण कार्य किया गया है।

निष्कर्ष

वास्तविकता में अयोध्या में पर्यटन विकास में अनेक परियोजनाओं का कियान्वयन किया जा रहा है। परन्तु वर्तमान समय संचार का युग है जिसमे अयोध्या के ऐतिहासिकता से

जुड़ी अनेक स्थलों को प्रमुखता से प्रामाणिक ग्रन्थों के आधार पर मुख्य धारा में लाकर उसके ऐतिहासिकता एवं जीर्णशीर्ण अवस्था से भव्य रूप प्रदान कर तथा पौराणिक कुण्डों का चिन्हांकन, संरक्षण एवं सौन्दर्यीकरण करके पर्यटन की आसीम सम्भावनाओं का कियान्यवन कर अयोध्या को पर्यटन वैश्विक मानचित्र पर लाया जा सकता है एवं पुनः रामराज्य की परिकल्पना को प्रासंगिक किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अथर्व वेद (10.2.31)
2. अयोध्या का इतिहास, लेखक–लाल सीताराम, प्रकाशक–हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद। प्रकाशन वर्ष 1932
3. https://hindi.news18.com/news/business/ayodhya-ram-mandir-give-boost-to-religious-tourism-business-expansion-employment-opportunity-increased-3195355.html
4. https://www.amarujala.com/uttar-pradesh/faizabad/ayodhya-will-become-the-new-center-of-up-s-economy
5. पर्यटन का नया आयाम ग्रामीण पर्यटन अजिता कुमारी Paripex सितम्बर 2019 ISSN 22501991
6. साक्षी, अयोध्या शोध संस्थान द्वारा वार्षिक पत्रिका प्रकाशन वर्ष 2020–21
7. https://www.amarujala.com/uttar-pradesh/faizabad/ayodhya-will-become-the-new-center-of-up-s-economy
8. https://ayodhyasamachar.com/singledisplaynewsWithphoto.php?id=54930